classmate

Date ________
Page ________

⑥ मुस्लिम कालीन शिक्षा (1200 AD – 1700 AD)

मुस्लिम कालीन शिक्षा के उद्देश्य :-

1) मुस्लिम शिक्षा में ज्ञान का प्रसार
2) इस्लाम धर्म का प्रचार करना
3) मुस्लिम संस्कृति का प्रचार करना
4) नैतिकता पर विशेष बल
5) धार्मिकता का समावेश
6) चरित्र का निर्माण
7) भौतिक ऐश्वर्य की प्राप्ति
8) मुस्लिम श्रेष्ठता की स्थापना

मध्यकालीन की विशेषताएँ :-

1). बिसमिल्लाह रस्म :- मुस्लिम शिक्षा का प्रारम्भ बिसमिल्लाह रस्म से होता था बालक की आयु 4 वर्ष, 4 माह और 4 दिन की हो जाने पर उसे नये कपड़े पहनाकर मौलवी साहब के पास ले जाता था इसके बाद मौलवी साहब बालक के सामने कुरान की कुछ (87) आयतें दोहरवाते थे या बुलवाते थे, यदि बालक उन्हें बोलने में असमर्थ होता था तो उसे केवल "बिसमिल्लाह" (अल्लाह के नाम पर शुरू करना) कहना ही पर्याप्त समझा जाता था तब बालक की औपचारिक शिक्षा प्रारम्भ हो जाती थी इस प्रकार से मौलवी

साहब को कुछ नजराना देकर बालक को 'मकतब' में प्रवेश कराया जाता था धनी तथा सम्पन्न व्यक्ति मौलवी साहब को अपने घर पर ही बुलाकर उसे अपने बच्चों का बिस्मिलाह रस्म अदा करा देते थे बिस्मिल्लाह रस्म वैदिक काल में उपनयन संस्कार तथा बौद्धकाल में प्रवज्जा संस्कार से मिलती जुलती है।

शिक्षण संस्थाएँ! –

मकतब	मदरसा
1) प्राथमिक शिक्षा (प्राथमिक शिक्षा का केन्द्र होता था)	1) उच्च शिक्षा का केन्द्र होता था
2) मकतब शब्द की उत्पत्ति अरबी भाषा के कुतुब शब्द से हुयी है जिसका अर्थ है लिखना	2) मदरसा शब्द की उत्पत्ति दरस भाषा के शब्द से हुयी है जिसका अर्थ है भाषण देना
3) मकतब एक अध्यापकीय था	3) यह बहुअध्यापकीय था
4) एक विशेष रस्म होती थी जिसे बिस्मिल्लाह रस्म कहते थे	4) कोई भी रस्म नहीं होती थी
5) प्रवेश की आयु 4 वर्ष, 4 माह, 4 दिन	5) कोई निर्धारित नहीं था
6) निशुल्क शिक्षा	6) शुल्क शिक्षा
7) स्त्री शिक्षा थी	7) स्त्री शिक्षा नहीं था
8) व्यावसायिक शिक्षा नहीं था	8) व्यावसायिक शिक्षा थी
9) उपाधियाँ नहीं थी	9) उपाधियाँ दी जाती थी धर्मशास्त्र – आलिम – जो इस्लाम में विशेष योग्यता काबिल – जो अरबी, फारसी, साहित्य में विशेष योग्यता फाजिल – तर्क तथा दर्शनशास्त्र में योग्यता
10) परीक्षा मौखिक होती थी	10) विद्यार्थीयों की कोई नियमित परीक्षा नहीं होती थी
11) प्राथमिक स्तर पर वर्णमाला के अक्षर, सुन्दर लेख, लिखना, पढ़ना, अंकगणित, बातचीत कथा, जीवनीयाँ, नैतिक विकास के कहानीयाँ	11) छात्रों को कुरान की आयतें, सूफी सिद्धान्त, इस्लामी इतिहास, इस्लाम धर्म इस्लाम कानून, हिन्दू धर्म दर्शन एवं इस्लामी साहित्य आदि की शिक्षा दी जाती थी

पाठ्यक्रम

इस शिक्षा प्रणाली में उच्च शिक्षा की अवधि 10 से 12 वर्ष की थी इसका पाठ्यक्रम अतिविस्तृत तथा दो भागों में बांटा गया है

(1) लौकिक शिक्षा! – इसके अन्तर्गत अरबी अथवा फारसी भाषाओं का साहित्य एवं व्याकरण तर्कशास्त्र, दर्शनशास्त्र, कानून, ज्योतिष, गणित, इतिहास, भूगोल, यूनानी चिकित्सा और कृषि आदि विषय प्रमुख थे। गणित और ज्योतिष

के लिए लाहौर और सियालकोट

चिकित्सा, ज्योतिष → जयपुर, आगरा

कविता और संगीत → दिल्ली

(1) **धार्मिक शिक्षा** → इसके अन्तर्गत इस्लाम धर्म की शिक्षा दी जाती थी जिसमें कुरान का गहन एवं विस्तृत अध्ययन, इस्लामी कानून आदि विषय सम्मिलित थे।

कालान्तर में अकबर ने शिक्षा को जीवनोपयोगी के लिए पाठ्यक्रम में महत्वपूर्ण परिवर्तन कराए थे और हिन्दू धर्म दर्शन एवं साहित्य को भी पाठ्यक्रम में स्थान दिलाया था।

शिक्षण विधि →

(1) भाषण
(2) रटना, (कलमा या कुरान की आयतों को रटवाना)
(3) व्याख्यान विधि
(4) तर्क-वितर्क विधि
(5) स्वाध्याय विधि
(6) मौखिक विधि

गुरु-शिष्य संबंध → मुस्लिम शिक्षा प्रणाली में शिष्य गुरु का बड़ा आदर व सम्मान करते थे उनमें परस्पर पर्याप्त घनिष्ठता व आत्मीयता भी रहती थी गुरु भी अपने शिष्यों से विशेष प्रेम रखते थे व उन्हें योग्य बनाने में गर्व का अनुभव करते थे कक्षानायकी पद्धति के प्रचलन के कारण अध्यापक की अनुपस्थिति में वरिष्ठ शिष्य ही कक्षा को संचालित करता है या मुस्लिम बादशाहो के दरबारो में भी शिक्षक का आदर किया जाता था लोगो का विश्वास था कि जो विद्यार्थी अपने उस्ताद को प्रसन्न कर लेता है उससे खुदाबंद प्रसन्न हो जाता है और उसे सच्चा ज्ञान मिलता है विद्यार्थी भी अपने उस्ताद को प्रसन्न कर लेता है उस्ताद के प्रति विनम्र रहते थे तथा उनका सम्मान करते थे छात्रावासों में गुरु तथा शिष्यों के साथ रहने से भी उनमें आत्मीयता की भावना पनपती थी गुरु अपने शिष्य को परिवार का एक सदस्य ही मानते थे परन्तु इस काल में वैदिक काल की भाँति गुरु-शिष्यों में वह पवित्रता व समर्पण की भावना नहीं थी जो प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति में थी। हालांकि औरंगजेब द्वारा अपने गुरु का अपमान किए जाने की घटना को केवल अपवाद स्वरूप लिया जा सकता है इस प्रकार कह सकते हैं कि गुरु शिष्य के आदर्श सम्बन्धों की श्रेष्ठ परम्परा को इस काल में भी यथावत बनाए रखने का प्रयास किया जाता था।

परीक्षाएँ एवं उपाधियाँ → मध्यकालीन शिक्षा में छात्रों की किसी भी प्रकार की परीक्षा व्यवस्थित परीक्षा प्रणाली का प्रचलन नहीं था कक्षोन्नति के लिए परीक्षाएँ नहीं होती थी वरन् छात्र के सम्पूर्ण वर्ष के कृत कार्यों के आधार पर शिक्षक अपने विवेक से छात्र को एक कक्षा से दूसरी कक्षा में तरक्की दे देता था किसी विषय में गहन अध्ययन अथवा अद्वितीय प्रतिभा प्रदर्शित किया जाने पर करने वाले छात्रों की उपाधियों से विभूषित किया जाता था जैसे —

i) साहित्य के छात्रों को "काबिल"
ii) धर्मशास्त्र के छात्रों को "आलिम"
iii) तर्क एवं दर्शनशास्त्र छात्रों को "फाजिल"

उस काल में काबिल उपाधि प्राप्त व्यक्तियों को ही शासन में उच्च पदों पर नियुक्त किया जाता था छात्रों की उपाधियाँ प्रदान करने के समय नियमित रूप से दिक्षान्त समारोहों का आयोजन किया जाता था।

अनुशासन :- मुस्लिम कालीन शिक्षा प्रणाली में अनुशासन का विशेष महत्व था मकतबों और मदरसों दोनों ही स्तरों पर शिक्षा ग्रहण करने की अवधि में छात्रों में मुस्लिम शिक्षा पद्धति के नियमों रीति-रिवाजों आदेशों परम्पराओं और मुस्लिम कानूनों का कड़ाई से पालन करना अनिवार्य होता था इन सभी नियमों और पद्धतियों को शिक्षक के आदेशों व निर्देशों के माध्यम से छात्रों तक संप्रेषित किया जाता था अतः सामान्यतः शिक्षकों की आज्ञा व आदेशों का पालन करना भी अनुशासन के अंतर्गत आता था जो छात्र इन आदेशों व नियमों आदि का पालन नहीं करते थे उन्हें कठोर दण्ड दिया जाता था चूँकि उस समय तक मनोवैज्ञानिक शिक्षण व्यवस्था का प्रचलन नहीं था इसलिए दमनात्मक शासन द्वारा ही छात्रों नियन्त्रित करने का प्रयास किया जाता था।

दण्ड एवं पुरस्कार :- मुस्लिम शिक्षा प्रणाली में प्रायः विद्यार्थी अनुशासित थे फिर भी जो विद्यार्थी किसी प्रकार का अपराध करते थे अनुशासन भंग करते थे अथवा नियमानुसार कार्य नहीं करते थे या शिक्षक की आज्ञा का पालन नहीं करते थे उन्हें कठोर शारीरिक दण्ड भी दिए जाने का प्रावधान था इसके विपरीत अच्छे कार्य करने वाले अच्छे चरित्र वाले अध्ययनशील कर्तव्यनिष्ठ, पढ़ाई में मन लगाने वाले तथा अनुशासन की कसौटी पर खरा उतरने वाले छात्रों को पुरस्कृत भी किया जाता था।

दंड के सम्बन्ध में कोई राजकीय नियम नहीं था व दंड देने में शिक्षक स्वतंत्र थे

शारीरिक दंड के अंतर्गत छात्रों को देर तक खड़ा रखना, मुर्गा बनाना, बेतों या छड़ी से पीटना, भूखा रखना, कोड़े लगाना तथा लात-घूसों या थप्पड़ से पीटना, कभी-2 कपड़े से बाँधकर टांग दिया जाता था।

योग्य छात्रों पुरस्कार व छात्रवृत्तियां भी दि जाती थी।

छात्रावास :- अधिकांश मदरसों के साथ छात्रावास संलग्न थे जिनमें सुदूर इलाकों से आने वाले छात्र रहकर उच्च शिक्षा प्राप्त किया करते थे छात्रावासों में छात्रों का जीवन अधिक सुविधाजनक या अभिभावकों द्वारा अपने बच्चों के लिए सभी सुविधाएं जुटा दी जाती थी छात्रों को प्रतिदिन मुर्गा, रोटी, फुलाव, दोरमा तथा एक तश्तरी मिठान दिया जाता था।

वित्त व्यवस्था :- मदरसों की आर्थिक व्यवस्था का दायित्व राज्य का नहीं था क्योंकि उस समय शिक्षा के लिए राज्य द्वारा अलग से कोई व्यवस्था नहीं की गयी थी अतः मदरसों की समस्त आर्थिक व्यवस्था व्यक्तिगत प्रबन्ध समितियों और धनी व्यक्तियों द्वारा की जाती थी अधिकांश मदरसों के साथ छात्रावासों की व्यवस्था भी की गई थी शासकों एवं धनी व्यक्तियों द्वारा मदरसों एवं छात्रावासों से कुछ जागीरें सम्बद्ध कर दी गयी थी।

स्त्री शिक्षा :- सैद्धान्तिक रूप में तो मुस्लिम संस्कृति महिलाओं का बहुत सम्मान करती है तथा उसे शिक्षा के समान अवसर देने की बात कहती है परन्तु व्यवहारिकता में इस दिशा में कोई ठोस उपाय या प्रयास नहीं किए गए यही कारण है कि स्त्रीयों को मकतबों में प्राथमिक शिक्षा तो प्रदान की जाती थी मगर उच्च शिक्षा अर्थात् मदरसों में उनको प्रवेश की अनुमती नहीं थी प्रवेश निषेध का बहुत बड़ा कारण पर्दाप्रथा थी उच्च शिक्षा तक आते-2 बालिकाएं बड़ी हो जाती थी और उनके लिए बुर्का पहनना अनिवार्य हो जाता था राज्य या समाज की ओर से भी इनके लिए अलग शिक्षा संस्थाओं की व्यवस्था नहीं की गयी थी जिसके फलस्वरूप निम्न व निर्धन वर्ग की बालिकाएं या तो ज्ञान प्राप्ति के लाभ से वंचित रह जाती थी या अका ज्ञान अत्यन्त कम पढने और लिखने तक सीमित रह जाता था सामान्यतः लड़कीयों को पढाना सम्मान के विपरीत समझा जाता था व उन्हें घर पर ही सिलाई, कढाई, रोटी बनाना, बातचीत करने का सलीका आदि सिखाया जाता था।

डॉ. एफ. ई. के. ई. के अनुसार, "मुस्लमान स्त्रियों के विशाल सामान्य समूह को पारिवारिक कर्तव्यों को करने के लिए घरेलू प्राशिक्षण के अलावा किसी भी प्रकार की कोई शिक्षा प्राप्त नहीं हुई।

व्यवसायिक शिक्षा :-

a) सैन्य शिक्षा
b) चिकित्सा शिक्षा
c) ललितकलाओं की शिक्षा

हिन्दू शिक्षा प्रणाली, बौद्ध, मुस्लिम शिक्षा प्रणाली का तुलनात्मक अध्ययन :-

समानताएँ :-

i) तीनो में निःशुल्क प्राथमिक शिक्षा
ii) शिक्षा का प्रारम्भ संस्कारों के माध्यम से होना
iii) तीनों में विद्यार्थी के व्यक्तित्व के सर्वांगीण
iv) विकास पर बल दिया जाता था
v) अनुशासन पर विशेष बल दिया जाता था
vi) गुरु-शिष्य में मधुर सम्बन्ध थे
vii) स्त्री शिक्षा की उपेक्षा
viii) नैतिकता के विकास पर बल
ix) धार्मिकता की शिक्षा दी जाती थी
x) तीनो शिक्षा में कक्षानायकी पद्धति
xi) शिक्षण विधि, पाठ्यक्रम एक जैसा था
xii) शिक्षा प्रणाली शासन के नियन्त्रण से मुक्त थी
xiii) शिक्षा मोक्ष के लिए दी जाती थी।
xiv) भविष्य में एक अच्छे नागरिक का निर्माण करना

असमानताएँ :-

i) वैदिक काल में स्वयं अनुशासित थे
ii) तीनों में संस्कार अलग-2 थे
iii) आयु अलग-2 थी
iv) शिक्षा का माध्यम अलग था
v) बौद्ध में पुस्तकालय थे
vi) मुस्लिम कालीन कठोर दण्ड व्यवस्था

गुण :-

a) अलग-2 मदरसों इस युग में गुरु-शिष्य सम्बन्ध अधिक मधुर थे।
b) शिक्षा के अन्दर धार्मिकता तथा भौतिकता का समन्वय था।
c) शिक्षा में धर्म की प्रमुखता होने के कारण छात्रों के चरित्र निर्माण पर अधिक बल दिया जाता था।
d) मुस्लिम शिक्षा में यद्यपि धर्म का स्थान था परन्तु इसके साथ भौतिक जगत के प्रति उदासीन नहीं था
e) मुस्लिम शिक्षा का पाठ्यक्रम अत्यन्त विस्तृत था।

दोष :-

a) शिक्षा प्रणाली से केवल मुसलमान छात्र ही लाभान्वित थे
b) इस काल में स्त्री शिक्षा की उपेक्षा की गई
c) छात्रों को तार्किक शक्ति का प्रोत्साहन नहीं दिया गया
d) मातृभाषाओं की अवहेलना की गयी
e) धार्मिक कट्टरता को बढ़ावा मिला
f) शिक्षा में आध्यात्मिकता का अभाव पाया गया था
g) मुस्लिम शिक्षा में कहीं-2 गुरु शिष्य संबंध मधुर नहीं पाए गए।
h) दंड व्यवस्था अत्यन्त कठोर थी

मुस्लिमकालीन शिक्षा में आधुनिक युग में प्रासंगिकता

a) निःशुल्क शिक्षा, छात्रवृत्ति
b) शिक्षा का विभिन्न स्तरों व वर्गों में विभाजन
c) उच्च शिक्षा में विशिष्टीकरण और उपाधि
d) कला-कौशलों और व्यवसायों की विशेष व्यवस्था
e) नियमित आर्थिक सहायता के लिए अनुदान
f) भिन्न-2 प्रकार की उच्च शिक्षा हेतु भिन्न-2 मदरसों का निर्माण किया जाता है
g) कक्षा-नायकी पद्धति
h) व्यक्तिगत संपर्क
i) धार्मिक व लौकिक शिक्षा समन्वय

प्राचीनकालीन शिक्षा और मुस्लिमकालीन शिक्षा समानताएं व असमानताएँ

समानताएं :-

a) शिक्षा निःशुल्क थी, सभी प्रकार की शिक्षा सम्बन्धी आर्थिक व्यवस्था समाज के अन्य स्त्रोतों से की जाती थी।
b) गुरु तथा शिष्य के सम्बन्ध अति मधुर थे
c) शिक्षा का महत्व समान था
d) संस्कारों का महत्व था जहां वैदिक काल में उपनयन संस्कार के माध्यम से आरम्भ होती थी और इस्लामी शिक्षा का शुभारम्भ 'बिस्मिल्लाह' से की जाती थी।

e) सैनिक शिक्षण का ज्ञान कराना
f) धर्म की प्रधानता थी
g) दोनो में शिक्षा विधि (रचना) समान थी

असमानताएं :-

a) शिक्षा का रूप व्यक्तिगत था, शिक्षा का स्वरूप सामूहिक
b) वैदकाल में शिक्षा में नारी की शिक्षा की उपेक्षा नहीं की गयी किन्तु मुस्लिम काल में की गयी
c) शिक्षा में शारीरिक दण्ड का व्यवधान वैदकाल में नहीं था किन्तु मुस्लिमकाल में था
d) उपाधियां वैदिकाल में नहीं थी किन्तु मध्यकाल में थी
e) वैदिक काल शिक्षा का माध्यम हिन्दी, ~~पाली~~ तथा संस्कृत थी परन्तु संस्कृत भाषा की प्रधानता थी वहीं मध्यकाल में शिक्षा का माध्यम अरबी तथा फारसी भाषा थी | उर्दू का महत्व भी आगे बढ़ गया |